गर्विता

महिलाओं ने बदली गावों और खेतों की किस्मत

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर में लालगंज क्षेत्र की आदिवासी महिलाओं ने जिले के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। दरअसल यहां पर इन महिलाओं ने तीन किलोमीटर लंबी नहर खोदकर गांव–घर और खेतों तक पानी पहुंचा दिया है। जंगलो में बेकार बह रहे पानी की धारा का रूख बदलने से यहां ना केवल पेयजल की समस्या से निजात मिली है बल्कि इलाके का जल स्तर भी बढ़ चला है। भू जलस्तर ऊपर आने से बंजर पड़ी जमीनों में जान लौट आयी है और इससे खेतों में खड़ी फसलें लहलहाने लगी हैं। महिलाओं की इन नायाब कोशिशों के बदौलत क्षेत्र के किसानों में मुस्कान लौट आई है और वे खुशी के गीत गाने लगे हैं।

सूखे से बेहाल जिंदगी में पानी की फुहार

जिला मुख्यालय से महज 30 किलोमीटर की दूरी पर है लालगंज ब्लॉक, विंध्याचल की तलहटी में बसा होने के नाते यहां पर साल भर जलस्तर सामान्य से नीचे ही रहता है। सूखा प्रभावित क्षेत्र होने की वजह से हर साल यहां गर्मी का मौसम एक आफत बनकर आता है और लोग बूंद–बूंद पानी के लिए तरस जाते हैं। सूखे से सबसे ज्यादा त्रस्त आदिवासी बाहुल्य गांव सेमरा आराजी की महिलाओं ने यह कारनामा कर दिखाया है।

बंजर पड़ी जमीनों में हरियाली लौटाने की चाहत

बेकार बह रहे पानी को गांव तक पहुंचाया

महिलाओं ने पहाड़ की तलहटी से निकल रही पानी की धारा को गांव तक पहुंचाने में सफलता पाई है। तीन किलोमीटर लंबी नहर खोदकर जंगल में बेकार बह रहे पानी की धारा का रूख उन्होंने गांव की ओर मोड़ दिया है। नहर के जरिये खेतों और गांव को पानी मिलने से लोगों को पानी की समस्या से पूरी तरह से निजात मिल गई है। पर्याप्त मात्रा में पानी मिलने

से लोग खेती के अलावा दैनिक कार्यों को भी अंजाम देने लगे हैं। बेहतर खेती होने से लोगों को भले दिन लौट आने की उम्मीद है। इलाके में हरियाली और खुशहाली लौटाने का श्रेय यहां की मेहनत मजदूरी कर दिन गुजारने वाली महिलाओं को जाता है जिन्होंने पिछले तीन सालों से अथक प्रयास कर सफलता की इस कहानी को गढ़ने में कामयाबी हासिल की है। यही वजह है आज यहां के मर्द अपनी जीवन संगिनियों की मिसाल देते नहीं थकते हैं। इलाके में जारी गुनगान से महिलाओं के हौसले बुलंद हैं।

बंजर जमीनों में हरियाली लौटाने की चाहत

बंजर पड़ी जमीनों में हरियाली लौटाने की चाहत इन लोगों के मन में शुरू से ही थी। क्योंकि पानी की मार का सबसे ज्यादा सामना यहां की महिलाओं को ही करना पड़ता था। वैसे भी पारंपरिक तौर पर जल संग्रह करने का जिम्मा इन्हीं लोगों के सिर पर होता था। मर्दों की बेरूखी और रोज–रोज के झंझट से महिलाएं परेशान हो चुकी थीं इसलिए महिलाएं इस समस्या का

स्थायी हल चाहती थीं। महिलाओं को पहाड़ की तलहटी से निकलने वाली इस अमृत जलधारा के बारे में पहले से ही पता था। महिलाएं चाहती थीं कि अगर पानी का रूख गांव की ओर मोड़ दिया जाए तो गांव की तस्वीर ही बदल सकती है और इस समस्या से हमेशा के लिए छुटकारा पाया जा सकता है, और हुआ भी ऐसा ही। हालांकि इन लोगों को पता था कि यह चुनौती भरा कार्य होगा पर इन लोगों ने अपनी जिद के सामने हार नहीं मानी और खुदाई के काम में लग गई।

यूं ही बनता गया कारवां

काम शुरू करने से पहले इन लोगों ने गांव की महिलाओं का एक संगठन बनाया। इन लोगों को पता था कि इस कठिन चुनौती को अकेले पार नहीं पाया जा सकता है। नहर खोदने वाली महिलाओं के इस संगठन का

नेतृत्व राजकली नाम की एक महिला ने किया। सबसे पहले आम बैठक कर सभी सदस्यों को गांव की समस्या और उसके निदान के बारे में जानकारी देकर उत्साहित किया गया। काम के बारे में सभी महिलाओं को पहले से ही पता था। योजना के मुताबिक मेहनत मजदूरी करने के बाद जो भी वक्त मिलता था महिलाएं नहर की खुदाई के काम में लग जाती थीं। यहां पर खुदाई के दौरान किसी भी सदस्य पर दबाव नहीं होता था। जो जब चाहे और जैसे चाहे काम कर सकती थी। बस ध्यान इस बात पर था कि नहर का रूख गांव की ओर ही होना चहिए।

3 साल में 3 किलोमीटर का शानदार सफर

झाड़–झंकार, चट्टान व पत्थर तोड़कर नहर निकालने का यह सिलसिला करीब तीन वर्षों तक यूं ही चलता रहा। दिनों–दिन राहें आसान होती गई और नहर निर्माण का कार्य पूरा होता गया। आखिरकार नतीजा यही हुआ कि जलधारा भी जंगल छोड़कर नहर के जरिये गांव तक पहुंच गयी। गांव में नहर का प्रवेश होते ही

लोगों में उम्मीद की एक किरण जगने लगी। नतीजतन मर्दों ने भी महिलाओं के इस काम में हाथ बंटाना शुरू कर दिया। मर्दों का साथ मिलने से महिलाएं उत्साहित थीं और इसी उत्साह के साथ नहर खुदाई का काम जल्द से जल्द पूरा कर लिया गया।

बहती धारा से सीखा जल प्रबंधन का तरीका

महिलाओं के इस प्रयास की बदौलत गांव और खेतों तक किसी ना किसी तरह से पानी तो पहुंच गया। लेकिन ठोस प्रबंधन के अभाव में पानी बर्बाद होने लगा। इससे इन लोगों को गहरा आघात लगा। लेकिन इस समस्या का भी इन लोगों ने हल ढूंढ निकाला। पानी को पहले सूखे पड़े कुंए में डाला गया। इससे कुएं का जलस्तर बढ़ने लगा। जब कुआं भी भर गया तो इसे बावड़ियों में छोड़ा गया। तालाबों

के जलमग्न होने से मवेशियों को पीने का पानी पर्याप्त मात्रा में मिलने लगा और बच्चों को पानी में खेलने का बहाना भी मिल गया।

इसके अलावा जल का संचयन होने से खेतों में पानी पहुंचाने में आसानी भी हुई। इन बावड़ियों के बाद पानी को सूखे खेतों में डाला गया। इससे खेतों में नमी लौटने लगी और घास उगने लगी। इससे मवेशियों को भरपेट चारा भी मिलने लगा।

धीरे–धीरे यहां पर पशुपालन का दौर लौट आया। कुएं और बावड़ियों में पानी भरने के बाद इन लोगों ने सिंचाई कार्य के लिए फाटक प्रणाली को अपनाया। खेतों में सिंचाई के लिए लोग विवेकानुसार फाटक खोलते थे और सिंचाई होते ही फाटक को बंद कर देते थे।

इस तरह जल की बर्बादी पर पूरी तरह से अंकुश लग

> महिलाओं के इस प्रयास की बदौलत गांव और खेतों तक किसी ना किसी तरह से पानी तो पहुंच गया। ■

गया।

जज़्बे को सबका सलाम

इन महिलाओं के अथक प्रयासों की बदौलत तीन किलोमीटर लंबी नहर की खुदाई के बाद गांव तक पानी पहुंच ही गया। महिलाओं की इस कामयाबी से खुश होकर जिला प्रशासन ने भी भरपूर मदद का आश्वासन दिया और नहर के पक्कीकरण के लिए आर्थिक मदद भी दी। अब इस नहर में बह रहे पानी की धारा के साथ मेहनत और खुशहाली की गाथा गूंजने लगी है। इन महिलाओं के चेहरे पर अब मुस्कान लौट आई है। बेहतर खेती होने से इनके भी सपने अब सच होने लगेंगे। इन आदिवासी महिलाओं ने कामयाबी की जो मिसाल पेश की है वो वाकई काबिल–ए–तारीफ है। उनके जज्बे को हम सलाम करते हैं। उम्मीद करते हैं कि देश का हर नागरिक खुद के विकास में अगर इतना योगदान दे तो गावों का विकास वाकई संभव है तभी इन गाँवों में गांधी जी के ग्राम स्वराज्य के सपने साकार होने लगेंगे। ■

बूंद-बूंद पानी बचाने का विशेष प्रयास

एक जमाने की मशहूर साप्ताहिक पत्रिका धर्मयुग में कार्टून कोना डब्बूजी के रचनाकार एवं कई लोकप्रिय साहित्यिक कृतियों के रचयिता आबिद सुरती पिछले तीन साल से हर रविवार को सुबह नौ बजे अपने साथ एक प्लम्बर (नल ठीक करने वाला) एवं एक महिला सहायक (चूंकि घरों में अक्सर महिलाएं ही दरवाजा खोलती हैं) लेकर निकलते हैं, और तब तक घर नहीं लौटते, जब तक किसी एक बहुमंजिला इमारत के सभी घरों के टपकते नलों की मरम्मत करवाकर उनका टपकना बंद नहीं करवा देते। खुद को सिर्फ 75 वर्ष का नौजवान कहने वाले आबिद सुरती इस मुहिम के पहले साल में ही एक अनुमान के मुताबिक 4,14,000 लीटर पानी बरबाद होने से बचा चुके हैं। तब से अब तक दो वर्ष और बीत चुके हैं। जिसके अनुसार पानी की बचत का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। सुरती का मानना है

(शेषांश पृष्ठ 42 पर)